B.A-III
Paper 6th
Unit-1-0.6

Rousseau: General Will

Topic:- रूसो की सामान्य इच्छा"

राजनीतिक चिन्तन के इतिहास में रूसो की "सामान्य-इच्छा" विषयक धारणा अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जनतंत्रवादियों ने इसे जनतंत्र की आधारशिला कहा है। हीगल, काण्ट, ग्रीन आदि विचारकों ने रूसो के विचारों को अपनाकर अपने आदर्शवाद को संपुष्ट किया है। जोन्स ने कहा है कि "रूसो की सामान्य इच्छा की धारणा केवल सर्वाधिक केन्द्रीय कल्पना है बल्कि राजनीतिक चिंतन को सर्वाधिक मौलिक, सर्वाधिक रोचक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।"

सामान्य इच्छा क्या है? (What is "General Will"?) सामान्य इच्छा के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए रूसो ने मनुष्य की दो प्रकार की इच्छाओं का उल्लेख किया है, "व्यक्तिगत इच्छा" तथा सार्वजनिक या वास्तविक इच्छाएँ (Actual Will and Real Will)। व्यक्तिगत इच्छाएं रूसो के मत में मनुष्य के निम्न स्व (Lower Self) पर आधारित होती हैं। ये स्वार्थी और क्षणिक होती हैं, क्योंकि इनसे प्रेरित होकर मनुष्य हमेशा अपने वर्तमान के विषय में सोचता रहता है। व्यक्तिगत इच्छाएँ स्वार्थपूर्ण होती हैं क्योंकि मनुष्य इनसे प्रेरित होकर स्वार्थी धन्धों में लगा रहता है। इन्हें विवेकपूर्ण नहीं कहा जा सकता क्योंकि ये मनुष्य को विभिन्न दुष्प्रवृत्तियों और बुराइयों का शिकार बनाती हैं। दूसरी तरफ "सार्वजनिक या वास्तविक" इच्छाएँ, रूसो के मत में मनुष्य को श्रेष्ठ स्व (Higher self पर आधारित होती हैं, जो मनुष्य को निजी स्वार्थों की ओर नहीं बल्कि सार्वजनिक और सामान्य हित की ओर प्रेरित करती हैं। सामान्य हित वह हित है जिससे सभी मनुष्यों के व्यक्तिगत हितों को सामान्य रूप से संतुष्टि मिलती है। इस प्रकार ये इच्छाएँ व्यक्ति और समाज दोनों के हितों में सामंजस्य स्थापित करती हैं। रूसो ने मनुष्य की दो प्रकार की इच्छाओं के प्रसंग में अपनी "सामान्य इच्छा" विषयक धारणा का स्पष्टीकरण किया है, उसके मत में मनुष्य की सार्वजनिक इच्छाएं ही उसकी वास्तविक इच्छाएँ हैं। इसी से प्रेरित होकर मनुष्य अपने व्यक्तिगत स्वार्थों का परित्याग करता है, अतः राज्य के सभी व्यक्तियों की सार्वजनिक या वास्तविक इच्छाओं का योग ही "सामान्य इच्छा" है।

Scanned with CamScanner

"सामान्य इच्छा" विषयक रूसो के विचारों के संबंध में विद्वानों और लेखकों ने अपने-अपने विचार दिये हैं। "वेपर" के अनुसार "सामान्य इच्छा" सबों के हित के लिए सबों की आवाज है। नागरिकों की इच्छा तभी सामान्य इच्छा का रूप ले सकती है, जब वे अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को छोड़कर सार्वजनिक हित की बात सोच रहे हों। "गेटेल" के अनुसार सामान्य इच्छा विशिष्ट हितों को छोड़कर सामान्य हित के अनुरूप होती है। स्वयं "रूसो" के शब्दों में "सामान्य इच्छा वह इच्छा है जो सबों से होकर आती है तथा सबों पर लागू होती है। मतदाताओं की संख्या के बजाय उनको संयुक्त करने वाला सार्वजनिक हित ही इसे सामान्य बनाता है।

सामान्य इच्छा और सबकी इच्छा में अन्तर (Difference between the General Will and the Will of all) :— रूसो ने सामान्य इच्छा की अपनी धारणा को अधिक स्पष्ट करने हेतु सबकी इच्छा के साथ इसकी भिन्नता बताती है। सबकी इच्छा वैयक्तिक हितों को प्रश्रय देती है। यह विशिष्ट इच्छाओं का योग मात्र है। परन्तु सामान्य इच्छा मात्र सार्वजनिक हित का ध्यान रखती है, यह वैयक्तिक हितों का ध्यान नहीं रखती है।

सामान्य इच्छा और जनमत :— रूसो ने सामान्य इच्छा तथा जनमत (General Will and Public Opinion) में भी अन्तर किया है। जनमत में मनुष्य या मतदाताओं की संख्या का ख्याल किया जाता है। इसमें यह देखा जाता है कि किसी विषय या प्रश्न पर जनता का कितना भाग क्या कहता है। अतः जनमत से सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति नहीं होती है। सामान्य इच्छा संख्या के बजाय सार्वजनिक हित पर जोर देती है। एक व्यक्ति अथवा कुछ थोड़े से व्यक्ति भी अपनी वास्तविक और निःस्वार्थ इच्छाओं से निर्देशित होकर सामान्य इच्छा का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, जबकि जनमत अल्पमत की अवहेलना कर सकता है। अतः सामान्य इच्छा को जनमत नहीं कहा जा सकता है।

सामान्य इच्छा की विशेषताएं :— रूसो के सामान्य इच्छा में निम्नलिखित विशेषताएं स्पष्ट होती हैं।

(i) संप्रभुता और सर्वोच्चता :— रूसो ने सामान्य इच्छा को संप्रभु और सर्वोच्च कहा है। यह सार्वजनिक हित को ध्यान में रखती है, अतः कोई दूसरी इच्छा इसका प्रतिरूप नहीं हो सकती है। सामान्य

Scanned with CamScanner

इच्छा, रूसो के मत में सभी विधियों का स्रोत है। राज्य का कोई भी व्यक्ति इसके निर्देशों और नियमों की अवहेलना नहीं कर सकता है। रूसो के अनुसार अगर कोई व्यक्ति सामान्य इच्छा के विरुद्ध आचरण करता है, अपनी ही स्वतंत्रता पर आघात करता है।

(ii) स्थायित्व :— रूसो द्वारा नाईति सामान्य इच्छा में स्थिरता रहती है। यह ज्ञान और विवेक पर आधारित होती है। अतः ज्ञान और विवेक की भाँति सदा इसमें स्थायित्व बना रहता है। इसका कभी अन्त नहीं होता। भ्रष्ट विचार कभी सामान्य इच्छा को कलुषित नहीं कर सकते।

(iii) एकता :— रूसो ने कहा है कि सामान्य इच्छा राष्ट्रीय जीवन का आधार है क्योंकि राष्ट्र को इससे एकता और स्थिरता मिलती है। सामान्य इच्छा भिन्नता में एकता स्थापित करती है, सभी व्यक्ति सार्वजनिक हित में अपने निजी हितों का दर्शन करते हैं।

(iv) अदेयता :— रूसो ने सामान्य इच्छा को सम्प्रभु कहा है, अतः इसने इसकी अदेयता को स्वीकार किया है। रूसो के अनुसार सामान्य इच्छा किसी व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूह को हस्तान्तरित नहीं की जा सकती है। यह सम्पूर्ण समाज में निहित रहती है और सामाजिक हितों की ~~[illegible]~~ अभिवृद्धि करती है। सम्पूर्ण समाज ही सामान्य इच्छा का एकमात्र निवास-स्थान है।

(v) अविभाज्यता :— रूसो ने सामान्य इच्छा को अविभाज्य बतलाया है। सामान्य इच्छा छोटे-छोटे समूहों की इच्छा में विभाजित होकर निहित स्वार्थों को प्रश्रय नहीं दे सकती। सामान्य इच्छा एक अखण्ड, अदेय और अविभाज्य होती है। रूसो ने इसे सदैव अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु इसे अविभाज्य कहा।

(vi) सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति कानून के द्वारा :— रूसो के अनुसार सामान्य इच्छा, जो सदैव उचित और ठीक होती है, की अभिव्यक्ति कानून के माध्यम से होती है। सम्पूर्ण राजनीतिक समुदाय अपने सदस्यों के निजी और सार्वजनिक हितों में सामंजस्य की स्थापना करते हुए सामान्य इच्छा के निर्देशानुसार कानूनों का निर्माण करता है। इसप्रकार रूसो के दर्शन में विधायिका अथवा व्यवस्थापन संबंधी कार्य सम्पूर्ण समुदाय के द्वारा सम्पादित होता है न कि किसी शासनांग द्वारा। समुदाय ही उचित-अनुचित बातों का ध्यान रखके सामान्य इच्छा को अभिव्यक्त करता है।

Scanned with CamScanner

आलोचनाएँ :- आलोचकों ने रूसो के "सामान्य इच्छा" सिद्धान्त की अनेक आलोचनाएँ की हैं। जो निम्नलिखित हैं।

(i) सिद्धान्त की अस्पष्टता :— रूसो ने अपने "सामान्य इच्छा" सिद्धान्त को प्रभावित रूप से स्पष्ट करना चाहा है, परन्तु उसके सिद्धान्त अस्पष्टता दूर नहीं हो पाती। उसने कहा है कि सामान्य इच्छा अल्पमत, बहुमत अथवा किसी एक व्यक्ति की इच्छा हो सकती है, और यह सम्पूर्ण समुदाय के हित से संबंध रखती है। परन्तु समुदाय या समाज कहने से एक अमूर्त विचार की उत्पत्ति होती है, जो वर्ग अत्याधिक शक्तिशाली होता है, वह ही सम्पूर्ण समाज पर हावी हो उठता है। "वेपर" ने ठीक कहा है कि "जब रूसो हमें सामान्य इच्छा का पता ही नहीं दे सकता तो इस सिद्धान्त के प्रतिपादन से लाभ ही क्या हुआ।

(ii) एक काल्पनिक उड़ान :— आलोचकों के मत में रूसो की सामान्य इच्छा एक काल्पनिक उड़ान है। सामान्य इच्छा अपने असल रूप में व्यवहारिक नहीं हो सकती। व्यवहार में आने पर यह विकृत हो जायेगी। रूसो ने परिणामों की चिंता से मुक्त होकर शून्य में उड़ान भरने का प्रयास किया है।

(iii) तानाशाही के बीज :— आलोचकों के मत में रूसो ने अपने सामान्य इच्छा के सिद्धान्त में तानाशाही के बीज बोये हैं। व्यक्ति सारे अधिकार सामान्य इच्छा को समर्पित कर देते हैं जिसके फलस्वरूप राज्य की निरंकुशता स्थापित होती है। यद्यपि रूसो ने वैयक्तिक स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने की काफी कोशिश की है। "कोल" के शब्दों में " इस बात की क्या गारंटी है कि राज्य स्वयं अपने को स्वतंत्र बनाने में अपने सदस्यों को दास नहीं बना डालेगा"?

(iv) अन्तर्विरोध (Contradiction) :— सामान्य इच्छा के संबंध में रूसो के विचार अनेक अन्तर्विरोध से भरे पड़े हैं। कभी उसने कहा है कि सामान्य इच्छा केवल सार्वजनिक हित से संबंध रखती है, तो कभी उसने कहा है कि व्यक्तिगत हित के क्षेत्र में भी सामान्य इच्छा प्रभावित हो सकती है। "प्रो० सेबाइन" ने ठीक लिखा है कि " सोशल कन्ट्रैक्ट में सामान्य इच्छा के सिद्धान्त का विकास विरोधाभासों में अन्तर्ग्रस्त है"।

(v) अन्य चिन्तकों के भिन्न विचार :— हिगल ने रूसो के

सामान्य इच्छा के सिद्धान्त से भिन्न विचार दिए हैं। हीगल के अनुसार सामान्य इच्छा पूर्णतया सामान्य नहीं है, क्योंकि उसकी उत्पत्ति वैयक्तिक इच्छाओं से होती है। टी० एच० ग्रीन का कहना है कि "सामान्य इच्छा राज्य की इच्छा से कहीं अधिक राज्य के लिए अच्छा है।

रूसो का यह कहना भी सही प्रतीत नहीं होता है कि मनुष्यों की स्वार्थपूर्ण वैयक्तिक इच्छाएँ परस्पर विरोधी होकर एक दूसरे को नष्ट कर देती हैं, और उनके पास जो वास्तविक इच्छाएँ बच जाती हैं उनका योग ही सामान्य इच्छा है। "Tozer (टोजर) का कहना है कि यह भी संभव है कि विरोधी इच्छाएँ एक दूसरे को नष्ट नहीं करें या समाज में गुटबन्दी चलती रहे। रूसो केवल तर्क द्वारा सिद्धान्त की रचना करता है परन्तु व्यवहारिक पक्षों की अवहेलना करता है।

सामान्य इच्छा सिद्धान्त का महत्व :— कुछ आलोचकों के आधार पर रूसो के सामान्य इच्छा सिद्धान्त के महत्व को कम नहीं किया जा सकता है। रूसो पर यह भी आरोप नहीं लगाया जा सकता कि उसने सामान्य इच्छा के संदर्भ में एक निरंकुशवादी और सर्वसत्तावादी राज्य का समर्थन किया है। रूसो ने अपने ग्रन्थ Emile" में लिखा है " व्यक्ति इतना महान होता है कि उसे दूसरों का कार्य करने के लिए एक यन्त्र मात्र नहीं समझा जा सकता, एक अन्य स्थल पर उसने कहा कि छात्र को यह सिखाया जाना चाहिए कि वह अपने को सतत एक साध्य समझे न कि एक साधन। "राइट" (Wright) ने ठीक ही कहा है कि रूसो ने व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा राज्य की शक्ति में सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश की है। हरमन" ने कहा है कि "सामान्य इच्छा" विषयक रूसो की धारणा मौलिक तथा अत्यधिक रूप से प्रेरक है"।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आलोचनाओं के बावजूद भी रूसो के सिद्धान्त महत्वहीन नहीं हैं। रूसो का सिद्धान्त हॉब्स और लॉक के विचारों में अभाव की पूर्ति करता है। रूसो ने जन इच्छा को आधार बनाकर निरंकुशवाद और संविधानवाद के प्रसंग में जनता का पक्ष-पोषण किया। इसके सिद्धान्त में सभी व्यक्ति शासन संचालन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

—— x —— x ——

Scanned with CamScanner